P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-V* January-2016

भारत और पड़ोसी देशों के राजनैतिक संबंधो का विश्लेषण

रागनी अग्रवाल
प्राध्यापिका,
राजनीति शास्त्र विभाग,
शा. कन्या महा विद्यालय,
रांझी जबलपुर

सारांश

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने के साथ ही साथ एक बड़े भू–भाग एवं जनसंख्या वाला देश भी है। यद्यपि भारत को स्वतंत्र हुए लगभग पैंसठ वर्षो से अधिक का समय व्यतीत हो गया है इसलिए यह नही कहा जा सकता कि भारत की विदेश नीति अचानक तैयार कि गई है, बल्कि विदेश नीति को तैयार करने में देश के भौगोलिक पर्यावरण के साथ–साथ जनसंख्या के हित को ध्यान मे रखा गया है, साथ ही इस तथ्य को वरीयता प्रदान की गई है, कि भारत की विदेश नीति से किसी भी पड़ोसी देश के न तो भौगोलिक पर्यावरण प्रभावित हो और न ही वहाँ के जनमानस की भावनाए और नही उस देश की अर्थ व्यवस्था इसलिए भारत की विदेश नीति पर सत्य एवं अहिंसा जैसे तत्वों का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। इतिहास गवाह है, कि भारत की विदेश नीति में महात्मा बुद्ध से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी तक का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द : भारत शक्ति का नहीं मैत्री का उपासक है, भारत की विदेश नीति विश्वशांति परक है न कि आतंकवाद समर्थक।

प्रस्तावना

पहले भारत को रक्षा के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता था, किन्तु वर्तमान समय पर विदेश नीति के तहत पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धो में सुधार आया एवं भारत ने रक्षा के क्षेत्र में दूर दर्शिता का परिचय देते हुए आत्म निर्भर बनने के कई कदम आगे बढ़ा रखे है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है कि भारत पड़ोसी देशों के मध्य राजनैतिक सम्बन्धों के साथ ही साथ भौगोलिक पर्यावरण तथा सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक तथा सामरिक स्थिति का आंकलन कर देश के सर्वांगीण विकास के लिए नीतिया निर्धारित करें तथा सह सुनिश्चित करना कि नीति निर्धारण से भारत की सम्प्रभुता एकता संस्कृति, समाज, सभ्यता एवं अर्थव्यवस्था को किसी भी प्रकार का आघात ना पहुँचे क्याकि भारत गाँवों का देश है, तथा भारत की न केवल अर्थव्यवस्था बल्कि सामाजिक व्यवस्था भी गाँव को ध्यान में रखकर तय की जाती है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय समंको के माध्यम से किया गया है जिसमें प्राचीन काल के गौतम बुद्ध शासन काल की विदेश नीति से लेकर वर्तमान समय के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के भाषणों, पत्र–पत्रिकाओं समाचार पत्रों, में प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध ग्रन्थों एवं टेलीविजन तथा इन्टरनेट के माध्यम से जानकारियाँ प्राप्त कर, उन्हें अपनी भाषा में लिपिबद्ध किया गया है।

विश्लेषण

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, तथा एक बड़े भू–भाग एवं जनसंख्या वाला देश है। स्वतंत्र हुए अभी पैसठ वर्ष ही हुए हैं, किन्तु यह गुलाम देश पिछड़ा देश न केवल अपनी अलग पहचान बनाने में बल्कि अपने सिद्धांतों, आदर्शो और विश्व शांति के उद्देश्य तथा उसके प्रयासों से विश्व को प्रभावित करने में सफल हुआ है। इसके पीछे भारत की विदेशो नीति की महती भूमिका है। भारत की उपेक्षा कर पाना आज विश्व के लिए कठिन है।

किसी भी देश की विदेश नीति अचानक तैयार नही हो जाती, उसमें भीतर और बाहर कई तत्व काम करते हैं। पूरा इतिहास विदेश नीति के पीछे रहता है। देश का हित, उसकी सीमा, पर्वत, नदिया, भौगोलिक स्थिति, उपज खनिज आदि सब विदेश नीति निर्माण में छिपे तौर पर धीरे–धीरे परन्तु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जो संसाधन हमारे देश में नही है, वे दूसरे देशों से लेना पड़ता है। साथ ही दूसरे देशों की भी सहायता करनी होती है। लोगों का

राष्ट्रीय चरित्र, स्वभाव आहतें परम्पराएं, वे मौन तत्व हैं जो विदेश नीति में मुखर हो जाते हैं। भारत की विदेश नीति में महात्मा बुद्ध, अशोक, महात्मा गांधी, नेहरू आदि के विचारों को प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इसीलिए भारत की विदेश नीति पर शांति और अहिंसा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देश होने के कारण भारत ने अपनी अर्थ–व्यवस्था के विकास के लिए सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने का प्रयास किया। लम्बी दासता के कारण भारत सैनिक दृष्टि से सबल नही था। अपनी रक्षा के लिए वह विदेशों पर निर्भर था, इसलिए उसने सभी से मैत्री बनाये रखने दूरदर्शिता पूर्ण नीति अपनाना उचित समझा।

भारतीय विदेश नीति के निर्माता मुख्यतः पं. नेहरू थे। चूंकि भारत स्वयं साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद, उत्पीड़न आदि का भुक्तभोगी रहा है, उसने अपने कटु अनुभवों से तय किया कि विश्व के सभी पिछड़े देशों को मुक्ति संग्राम में सहयोग देगा। स्वतंत्रता के बाद नेहरू मुख्य रूप से महाशक्तियों की ओर ध्यान दिया तथा विश्व शांति को अपना ध्येय बनाया। महाशक्तियों की गुटबंदी और दांव–पेचों के कारण दुनिया को विश्व युद्ध की विभीषिका के दौर से गुजरना पड़ता था तथा आधुनिक युग में तो और भी व्यापक स्तर पर सर्वनाश हो सकता है। अतः भारत को वे यथा सम्भव दूर ही रखना चाहते थे। उनका कहना था कि हमारा विश्वास है कि शांति और स्वतंत्रता अविभाज्य है। किसी क्षेत्र की स्वतंत्रता हड़पे रखने से दूसरे क्षेत्र की स्वतंत्रता पर आंच आ सकती है। इस प्रकार संघर्ष और युद्ध शुरू हो सकते है, हम उपनिवेशों एवं दास्ता में जकड़े हुए राष्ट्रों की स्वाधीनता चाहते हैं, तथा सैद्धांतिक एव व्यावहारिक रूप से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए समान अवसरों के पक्षधर है। पं. नेहरू ने महाशक्तियों की ओर अधिक ध्यान दिया। नेहरू का सबसे बड़ा योगदान गुट निरपेक्षता की नीति है। भारत ने केवल गुट निरपेक्षता की नीति अपनायी बल्कि दोनों गुटों से अलग रहकर उन्हें परस्पर निकट लाने और तनाव कम करने में भी मदद की। गुट निरपेक्षता तटस्थता नहीं है। तटस्थता उदासीनता का परिचायक है– जबकि गुट निरपेक्षता सकारात्मक एवं गतिशील है। इस आधार पर भारत ने उचित को उचित एवं अनुचित को अनुचित कहने का अपना अधिकार अपने पास सदा रखा। भारत को यह नीति कई बार कठिन परीक्षा से गुजरी है। पाकिस्तान और चीन द्वारा आक्रमणों के दौरान भारत को विदेश नीति को प्रबल चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

भारतीय विदेश नीति के आलोचकों का आरोप है कि भारत ने पश्चिमी देशों पर अधिक ध्यान दिया किन्तु पड़ोसो देशों की उपेक्षा की। प्रारंभ में पड़ोसी देश नेपाल और भूटान के साथ भारत के संबंध सहज और सामान्य रहे थे। किंतु भारत के सभी पड़ोसी देश, चीन को छोड़कर, छोटे राज्य है। अतः भारत की ओर से उनके मन में एक भय ग्रंथि काम करती है। भारत द्वारा आर्थिक सहायता भी पसन्द नही करते–उसे वे भारत का Big Brotherly Behaveiour और उसकी आड़ में दखलंदाजी भी मानते है। भय ग्रंथि के कारण भारत को संदेह से देखने से इन देशों से भारत के संबंधों में जब तब उतार चढ़ाव आते रहें है। इस प्रकार भारत यदि शत्रु नही, तो अमित्र देशों से अवश्य घिरा हुआ है। किंतु आदर्शवादी होने के कारण पहले यह नही समझा। चीन के एकाएक आक्रमण तथा बाग्लादेश द्वारा भी आंखे तरेरने से भारत को देर में यह समझ में आया। पाकिस्तान से भारत के संबंध विशेष ध्यान देने योग्य हैं। ऐतिहासिक परिस्थितियो से भारत का सबसे बड़ा तनाव का कारण पाकिस्तान रहा है।

पं. नेहरू के बाद लालबहादुर शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री बने उन्हाने महाशक्तियों के साथ–साथ पड़ोसी राष्ट्रो से भी सहज संबंध बनाने का प्रयास किया, कच्छ रन को लेकर भारत पकिस्तान में विवाद हुआ एवं उसकी परिणिति 1 सितम्बर 1965 को युद्ध के रूप में हुई। दोनों देशों में तब ताशकन्द समझौता 10 जनवरी 1966 को हुआ था, इस समझौते की खास बात यह है, कि भारत ने अपनी ओर से पाकिस्तान के साथ एक अच्छे पड़ोसी का व्यवहार किया। जिस भूमि को यद्ध के मैदान में जीता था, उसे शांति की टेबल पर भारत ने उदारता से पाकिस्तान को वापस कर दिया। किंतु पाकिस्तान ने अपना पुराना रूख नही बदला। भारत के प्रति घृणा पर ही उसकी विदेशो नीति आधारित रही, सरकार चाहे किसी को भी हो। शास्त्री जी ने चीन श्रीलंका, नेपाल, भूटान सभी पड़ोसी राष्ट्रों से सहज संबंध रखे परन्तु वे ज्यादा कुछ नही कर सके।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शासन काल म भी पड़ोसी राष्ट्रों एवं महाशक्तियों के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया गया। 1965 के भारत–पाक युद्ध के बाद पाकिस्तान की स्थिति खराब हो गई थी। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान में मतभेद उग्र रूप से बढ़ चुके थे। याह्या खा ने बंगालियों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। जिससे स्थिति विस्फोटक हो गई और अंततः पाकिस्तान गृह युद्ध में फंस गया। शेख मुजीबुर्ररहमान के नेतृत्व में पाकिस्तान से विद्रोह कर स्वतंत्र बांग्लादेश के निर्माण में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की दूरदर्शिता ने नया इतिहास रच दिया। भारत ने पुनः पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए 3 जुलाई 1972 को एक समझौता किया जो शिमला समझौता के नाम से जाना जाता है। इस समझौत में तय हआ कि दोनों देश का एक दूसरे के विरूद्ध प्रचार नही करेंगे। इस समझौते में भी भारत ने युद्ध के मैदान में जीती जमीन को शांति की मेज पर पाकिस्तान को वापस कर दिया। इसी समय इंदिरा गांधी ने चीन, नेपाल, भूटान, वर्मा के साथ भो संबंध सुधारने का प्रयास किया। महाशक्ति रूस के साथ 20 वर्षीय मैत्री संधि भी की। जिसके कारण भारत की विदेशो नीति की आलोचना भी हुई कि भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को त्याग दिया है।

जनता शासन काल में अमेरिका के साथ सहज सम्बन्धों की शुरूआत हुई अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारत यात्रा की तथा भारत के समक्ष अणु विस्तार संधि पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव रखा। भारत इस प्रस्ताव से सहमत नही हुआ। इस समय भी पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध सुधारने का प्रयास किया गया। तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने चीन की यात्रा की और पड़ोसी राष्ट्रों चीन, पाकिस्तान, भूटान, वर्मा, श्रीलंका से संबंध सहज बनाना चाहा।

राजीव गाधी के प्रधानमंत्रित्व काल में महाशक्तियों एवं पड़ोसी राष्ट्रों के सम्बन्ध सुधारने पर बल दिया गया। उन्हाने इस बात पर जोर दिया कि हमारे जिन निकट पड़ोसी देशों के साथ गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, उनके साथ आपसी सम्बंध और बेहतर बनाने पर ध्यान दिया जाए। इस नीति के अनुसार प्रधानमंत्री ने दक्षिण एशियाई देशों में नेताओ के साथ अच्छे सम्बंध स्थापित करने के लिए अनेक सक्रिय कदम उठाये। इस समय श्रीलका में जातीय संकट बना हुआ था। प्रधानमंत्री ने कोशिश की यह समस्या हल हो। श्रीलंका की जातीय समस्या ने दोनों देशों के सम्बन्धों को प्रभावित किया। राजीव गांधी और श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धने के बीच 20 जुलाई 1997 को समझौता के बाद भारत ने शांति सेना भेजी लेकिन सम्बन्ध सहज नहो हो सके। पाकिस्तान की नीति हमेशा विष वमन की रही है, वह इस समय भी रही।

संयुक्त मोर्चा सरकार के प्रधानमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा पड़ोसी राज्यों के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए ''गुजरात ड्रॉक्ट्रिन'' का प्रतिपादन किया किंतु इस दिशा में कुछ खास नही कर सकें।

अब सन् 1999 के प्रारंभ से हवा के रूख में बदलाव के शुभ संकेत हए। नई सदी ड्यौढ़ी पर खड़ी दस्तक दे रही है, आधी शताब्दी भारत और पाकिस्तान ने परस्पर युद्ध तनाव और आरोप प्रत्यारोप में गंवा दी। यह सत्य है, कि इतिहास में कड़वाहट दर्ज है। काश्मीर में अभी भी पाक समर्थित आतंकवाद के कड़वे घूंट भारत को निगलने पड़ते है। लेकिन भविष्य में कड़वाहट कम की जा सकती है। प्रधानमंत्री बाजपेयी इस मत के व्यक्ति है। न केवल उनका यह मत है, बल्कि वे इस दिशा में ठोस पहल करने वाले पहले प्रधानमंत्री रहे। यही कारण है कि सारी विषमताओं के बावजूद, भारत संबंधो की कठोरता को पिघलाना चाहता है, परन्तु शिवसेना प्रमुख बालठाकरे द्वारा पाकिस्तान टीम को भारत न आने देने की धमकी के बावजूद केन्द्र सरकार ने दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सिद्ध की और दृढ़ता से काम लिया। परिणामस्वरूप पाकिस्तान टीम भारत आई एवं खेली।

दिल्ली से लाहोर के बीच बस यात्रा प्रारंभ हुई। अपने आप में ही यह शुरूआत पर्याप्त वजन रखती है। किन्तु बाजपेयी ने इस शुरूआत को भारत पाक संबंधा में मील का पत्थर बना दिया। बस के प्रयोग को प्रधानमंत्री ने बड़ी सूझ–बूझ से, दूरदर्शिता पूर्वक एक आशावादो शुभ प्रयोग बदल दिया। 20 फरवरी 1999 से प्रारंभ हुई इस बस के प्रथम यात्री अटल बिहारी बाजपेयी थे, जिन्हाने अमृतसर से बाघा तक 37 कि.मी. की यात्रा इस बस में तय की। बाघा से पाकिस्तान की सीमा प्रारंभ हाती है। यह दस वर्ष बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री को पाक यात्रा थी। बाघा के उस ओर पाकिस्तान प्रधानमंत्री मियॉ नवाज शरीफ बाजपेयी के स्वागत के लिये उपस्थित थे। बाजपेयी नवाज शरीफ के गाँव की माटी ले जाना नहीं भूले थे, जो उन्होने पाक प्रधानमंत्री को सौपी।

बरसों बाद भारत का यह वरिष्ठ राजनायक बस में बैठा होगा। मैत्री का संदेश इसी प्रकार विनम्रता व सौहार्द से दिया जा सकता है। बाजपेयी तहेदिल से भारत पाक संबंधो को सुधारना चाहते हैं। इस दिशा में उनके इस सकारात्मक कदम की विश्व में सहाराना हुई। निश्चित रूप से बाजपेयी ने दोनों देशों के प्रबुद्ध नागरिक व आम जनता का मन जीत लिया है। दोनों देश यदि अपना पुराना रूख छोड़ दे, तो नई सदी में देश अस्त्र–शस्त्रों पर पानी की तरह धनराशि न बहा कर अपनी अपनी गरीब जनता के विकास हेतु व्यय कर सकेंगे। लोगों ने बाजपेयी की इस यात्रा की संदेह की दृष्टि से भी देखा कि कहीं यह भी इजरायल और अराफत जैसी भेंट न हों। पर जहॉ तक प्रधानमंत्री बाजपेयी का संबंध है, उनके इरादों पर शक की गुंजायंश नही है। उनकी नीयत पाक साफ है। शरीफ ने भी कट्टर पंथियों की धमकियों और प्रर्दशनों क बावजूद भारत की इस पहल का लाहौर के गवर्नर हाउस में बाजपेयी की कविता हम ''हम जंग न होने देंगे'' सुनाकर स्वागत किया दोनों प्रधानमंत्रियों के संयुक्त घोषणा पत्र (लाहौर घोषणापत्र) में शांति तथा स्थिरता का उल्लेख किया गया है।

कश्मीर सहित सभी समस्याओ का शांतिपूर्ण तरीकों से निराकरण करना तथा दोनों देशों के बीच यात्रा प्रतिबंध सुधारने की भी चर्चा की गई दक्षिण एशिया की इन दोनों परमाणु शक्तियों (भारत एवं पाकिस्तान) ने परमाणु शक्ति की दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने, प्रक्षेपात्रों के परीक्षणों की पूर्व सूचना से एक दूसरे को सतर्क करने आदि को भी बात लाहौर घोषणा पत्र में की। द्विपक्षीय वार्ता का दायित्व दोनों देशों के विदेश मंत्रियों पर छोड़ा गया है, जो समय–समय पर मिलते रहेंगे। विदेश सचिव स्तर पर भी कार्य जारी रहेगा।

जो कुछ भी करना होगा, इस तथ्य को भुलाया नहीं जा सकता कि दोनों देशों की सरकारों को अपने देशों के आंतरिक दबावो में रहते हुए ही करना होगा। पत्रकार सम्मेलन में दोनों प्रधानमंत्री काश्मीर विषयक सभी प्रश्नों के उत्तर बखूबो टाल गए। यह इतना नाजुक और संवेदनशील मामला है, कि इस पर कोई कुछ कहने की स्थिति में न था, ना है। फिर भी परस्पर विश्वास निर्मित करने के उपायों जो शुरूआत हुई है, इसमें संदेह नही है।

भारतीय प्रधानमंत्री के लाहौर प्रस्थान के दौरान ही राजौरों में आतंकवादियों द्वारा नरसंहार की घटना ने माहौल को सकते में ला दिया। बाजपेयी ने नवाज शरीफ से स्पष्ट कहा है कि आंतकवादियों को पाकिस्तान द्वारा इस प्रकार बढ़ावा देते रहने से दोनों देशों के प्रगाढ़ता आना संभव न होगा।

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में महाशक्तियों एवं पड़ोसी राष्ट्रो के साथ सम्बंध सुधारन पर बल दिया गया। उन्होने प्रयास किया कि पड़ोसी देशों के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध बने। उन्होने पाकिस्तान और अन्य देशों के साथ सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया किंतु पाकिस्तान ने 26/11/06 को भारत में आतंकवाद ही फैलाया सीमा पर खड़े सैनिक शहीद हो गय और भारत पाकिस्तान सम्बन्ध समान्य नही हो पाया।

2014 के संसदीय चुनावों के बाद नई दिल्ली में सशक्त और स्थिर सरकार के उदय ने पड़ोसी देशों सहित अन्तराष्ट्रीय समुदाय को यह संकेत दिया कि भारत को अब गम्भीरता से लेने का वक्त आ चुका है। अर्न्तराष्ट्रोय मामला के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता

व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने पिछले एक साल में दिल्ली में हुई महत्वपूर्ण नेताओं की मेजवानी करने के अलावा, करीब डेढ़ दर्जन देशों की यात्राएं भी की।

वर्तमान सरकार की विदेश नीति सम्बन्धी पाथमिकताओं में सबसे पहले पड़ास को बहुत अहमियत दी गयी। शपथ ग्रहण समारोह में 26 मई 14 को सार्क के सभी देशों को आमंत्रित किया गया।

विदेश मंत्री ने भारत की पाकिस्तान नीति में किसी तरह के बदलाव से इंकार करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने शुरूआत से बातचीत के तीन मापदण्ड तय किये हैं, जिनसे पाकिस्तान को अवगत कराया गया है, और भारत बिना किसी तरह का बदलाव लाए उनका निष्ठापूर्वक पालन कर रहा है। पहला सिद्धान्त है, कि सभी मामले शांतिपूर्ण वार्ता के जरिये सुलझाए जाने चाहिए, दूसरा वार्ता भारत और पाकिस्तान के बीच में हो तीसरा चर्चा या संवाद शांतिपूर्ण महोल में हो। भारत इसका पक्षधर है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिसम्बर 15 में लाहार यात्रा की, परन्तु पाकिस्तान ने अगले ही समय पठान कोट में आतंकवादी गतिविधिया प्रारंभ कर दी।

रही बात विश्व में भारत की। भारत द्वारा परमाणु परीक्षण का पश्चिमी शक्तिया ने अपने लिए चुनौती मान लिया है। भारत पर दबाव बढ़ा है, पर भारत मुकरा नहीं। सी.टी.वी.टी. पर हस्ताक्षर न करना भारत द्वारा विश्व शांति का अपनी नीति का ही पुर्नघोषणा करना है, इससे भारत के वैज्ञानिकों एवं सैनिकों का मनोबल बढ़ा है।

भारत शक्ति नहीं मैत्रो का उपासक है। उसकी विदेश नीति ज्यों की त्यों है। परमाणु परीक्षण से स्थिति बदली नही है। भारत ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। युद्ध में जीति हुई भूमि सदा लौटा दी। आदशा की प्रतिष्ठा हेतु यह कूटनीतिक पराजय स्वीकार की नही तो कश्मीर समस्या तो कभो भी सुलझाई जा सकती थी, किसी ठोस सौदे के द्वारा।

भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नई और अभूतपूर्व नीति का जनक रहा है। विश्व राजनीति को उसका यह बड़ा योगदान रहा है। एशिया में चीन के प्रभुत्व को संतुलित करने के लिए भारत की भूमिका को स्वीकार करना आवश्यक है। विश्व में भी अमेरिका के एक छात्र प्रमुख को संतुलित करने हेतु भी विश्व के विशालतम प्रजातंत्र भारत को अब अधिक उपेक्षा करना उचित नहीं है।

भारत ने सदा संयुक्त राष्ट्र संघ में भी सकारात्मक व सार्थक भूमिका निभाई व पूरा सहयोग दिया है। अब समय आ गया है, कि भारत को अपने परिश्रम व भूमिका का फल मिले तथा वह सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाया जाए। भारत को उसका उचित स्थान देना पश्चिम के कुछ देशों की भीरूता दर्शाता है। यह न केवल भारत का अनादर व उपेक्षा है, यह करोड़ों मानवों का अनादर व उपेक्षा है। यही नहीं यह लोकतंत्र का अनादर व उपेक्षा है। अतः यह भारत को उसके यथोचित स्थान न देने की कामना रखने वाले देशों को अपने भीरूता के खेल से बाहर निकल आना चाहिए। यदि भारत को उसका यथोचित स्थान मिलेगा तो निश्चित रूप से वह और भी सक्रिय तथा सकारात्मक रूप से विश्व का मंगल कर सकेगा। पश्चिम नहीं जानता कि वह विश्व को किस महत्वपूर्ण सेवा से वंचित कर रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय विदेश नीति को देखने से विदित होता है कि भारत ने इस बात का ध्यान दिया है, कि पड़ोसी देश उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। यही बात है, कि आज भारत चारो तरफ से आंतकवाद, अलगाववाद जैसे समस्याओं से जूझ रहा है। पाकिस्तान की समस्या, नेपाल की समस्या, भूटान की समस्या, मिजोरम की समस्या श्रीलंका समस्या, चीन की समस्या आदि समस्या के महत्त्वपूर्ण उदारहण है। ये अप्रत्यक्ष रूप से न तो भारत से आर्थिक सहायता लेना पसंद करते और न ही वैचारिक संबंधों को सुदृढ़ करने में उत्साह प्रदर्शित करता है। जवाहरलाल नेहरू से लेकर डॉ. मनमोहन सिंह तक के कार्य काल में इन्हीं तथ्यों को अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। यद्यपि वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय की नरेन्द्र मोदी जी ने पड़ोसी देशां की यात्राएं कर राजनैतिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करने में सराहनीय प्रयत्न किया है। यदि यही स्थिति आगे भी बनी रहेगी तो निश्चिय रूप से भारत एक शक्तिशाली देश बनेगा साथ ही भविष्य में भारत से आतंकवाद एवं अलगाववाद जैसी समस्याओं को दूर किया जा सकेगा तथा भारत के पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित हो सकेंगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नेहरू, पं. जवाहर लाल (1983) इंडियाज फॉरन पॉलिसी कन्सेप्ट पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली पृष्ठ. 145 – 155।
2. कपूर, हरीश (1994) इंडियाज फॉरन पॉलिसी भाटिया विद्या भवन पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली पृष्ठ. 166 – 180।
3. खन्ना, वी. एन. (1999) द्विपक्षीय भारतीय विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.नई दिल्ली पेज 12 – 18।
4. दत्त बी. जी (1998) इंडियाज फॉरन पॉलिसी, मोतीलाल बजरंगी दास पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली पृष्ठ. 74 – 95।
5. खन्ना वी.एन. (2001) फॉरन पॉलिसी आफ इंडिया, विकास पब्लिशिंग कं. नई दिल्ली पृष्ठ. 78 – 95।